(1)

BA-(H)
पार्ट -थर्ड
मैथिली प्रतिष्ठा
पेपर - 6

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

## वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क परिचय:

वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क जन्म दरभंगा जिलाक तरौनी ग्राम मे सन् 1911 ई० मे ज्येष्ठ पूर्णिमाक दिन भेल छलनि। हिनक पिताक नाम गोकुल मिश्र छलनि। पारिवारिक आर्थिक स्थिति नीक नहि छलनि। गामक पाठशालामे प्रारंभिक शिक्षा शुरू कयलनि। 12 वर्षक उम्रमे संस्कृत सँ प्रथमा परीक्षा पास कएलनि। तरौनी गामक प्रतिष्ठित विद्वान अनिरुद्ध मिश्र हिनक प्रखर प्रतिभा कें देखैत हिनका पढ़ा-लिखा दैत प्रोत्साहित कएलनि। काशीमे हिनक भेंट कविवर सीताराम झा सँ भेल। हिनका मैथिली आ हिन्दीक कवि-कर्म दिस प्रेरित कएलनि। जाहि समय वैद्यनाथ मिश्र यात्री वाक्य विन्यासक चमत्कार मे लागल छलाह ओहि समय मे हिनक भेंट पं० बलदेव मिश्र सँ भेलनि। यात्री जी बहुमुखी, प्रतिभा सम्पन्न जनकवि आधुनिक मैथिली साहित्यक ताराकार पर स्वर्णाक्षर मे अंकित छथि। यात्रीजीक साहित्य जनसमाज जनभावक साहित्य अछि।

लोक भावनाक यथार्थ चित्रांकन हिनक साहित्यिक वैशिष्ट्य थीक। यात्रीजी निम्न वित्तीय परिवार मे रहितहुँ अपन लेखनी आ परिश्रमक माध्यम सँ आइ अपन ख्याति साहित्यक शीर्ष स्थान पर सुरक्षित रखने छथि। यात्रीजी जनवादी कवि छथि। ई जीवन भरि संघर्ष करैत रहलाह। यात्रीजी जकरा लेल लिखैत छथि ओकरे जकाँ जीवनी जीबैत छथि। हिनक कविता मे जन चेतना, छन्दक आ जनसमूहक हृदय बजैत अछि। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" यात्रीजीक मूल मंत्र छनि। 1941 ई० मे रामवृक्ष बेनीपुरीक कहला सँ हिन्दी मे 'नागार्जुन' नाम सँ आ मैथिली मे 'यात्री' नामसँ रचना करब प्रारम्भ कएलनि।

यात्रीजी यथार्थवादी प्रकृतिक छलाह। तरौनी, सतलखा, काशी, कोलकता, लंका, थाइलैण्ड आदि स्थान मे भ्रमण करैत अपन 'यात्री' उपनाम कें सार्थक करैत रहलाह। बहुभाषी विद यात्री, संस्कृत, मैथिली, हिन्दी आ बंगला भाषा मे कतेको पोथी लिखलनि। जीवनयात्राक क्रम मे यात्री जीकेँ कतेको सम्मान भेटलनि। 'पत्रहीन नग्न गाछ' नामक काव्य संकलन पर हिनका 1968 ई० मे साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटलनि। एकर अतिरिक्त अनेको सम्मान भेटलनि। 5 नवम्बर 1998 ई० कए 87 वर्षक अवस्था मे यात्रीजी एहि संसार सँ विदा भए लेलनि।

Somnath Kumar
8/08/20